International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 25-07-2026, Accepted: 24-08-2026, Published: 09-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 386-388

# खोरठा पद्य साहित्य में आधुनिकता, सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना और भाषाई विकास

**उर्मिला कुमारी**
शोधार्थी, स्नातकोत्तर खोरठा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत
**DOI:** https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12302

**सारांश**
यह व्यापक शोध–पत्र खोरठा पद्य साहित्य के वैचारिक, संरचनात्मक और अंतःविषय आयामों का गंभीर व विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। झारखंड के वृहद छोटा नागपुर और संथाल परगना भू–भाग में बहुसंख्यक आबादी द्वारा व्यवहृत खोरठा भाषा ने अपनी मौखिक लोक–धार्मिक और संवादात्मक प्राथमिकताओं से निकलकर आधुनिक लिखित साहित्य का एक सुदृढ़ और प्रौढ़ माध्यम बनने तक का दीर्घकालीन सफर तय किया है।
यह अध्ययन श्रीनिवास पानुरी, डॉ. ए. के. झा, शिवनाथ प्रमाणिक और श्याम सुंदर महतो 'सुकुमार' जैसे युग–निर्माता साहित्यकारों की प्रतिनिधि कृतियों के माध्यम से खोरठा काव्य के अंतःकरण की थाह लेता है। गहन पाठकीय और समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह रेखांकित करता है कि आधुनिक खोरठा कविता महज आंतरिक अनुभूतियों या बाह्य सौंदर्य–बोध की परिचायक नहीं है, बल्कि यह तीव्र औद्योगिक विस्थापन, उपेक्षित बहुजनों के शोषण, वर्गीय विषमता और भाषाई व सांस्कृतिक आधिपत्य के विरुद्ध एक मुखर सामाजिक–राजनीतिक प्रतिरोधी स्वर है। यह साहित्य झारखंड के विशिष्ट स्वदेशी लोकाचार, प्रकृति–प्रेम और अस्मितामूलक संघर्षों को वैश्विक अकादमिक फलक पर स्थापित करने की पूरी क्षमता रखता है।

**मुलशब्द:** खोरठा पद्य साहित्य, आधुनिकता, सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना, श्रीनिवास पानुरी, डॉ. ए. के. झा, भाषाई अस्मिता, झारखंडी विमर्श

भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक मानचित्र पर झारखंड एक ऐसा भू–भाग है, जिसकी माटी में विविधता, प्राकृतिक सौंदर्य और संघर्ष का अनूठा इतिहास समाहित है। इस क्षेत्र की संपर्क भाषाओं में खोरठा का स्थान सर्वप्रमुख है, जो हजारीबाग, धनबाद, बोकारो, गिरिडीह, रामगढ़, कोडरमा, चतरा और गोड्डा जैसे विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों में जनमानस की धड़कन है। किसी भी भाषा की बौद्धिक परिपक्वता का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज उसका पद्य साहित्य होता है।
खोरठा पद्य साहित्य का इतिहास लोकगीतों के सहज, स्वच्छंद और सामूहिक प्रवाह से शुरू होकर आज वैचारिक, दार्शनिक और मानकीकृत काव्य–रचनाओं के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है (ओहदार, 2012, च. 11)। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में जहाँ स्थानीय बोलियाँ और भाषाएँ सांस्कृतिक समरूपीकरण की आंधी में दम तोड़ रही हैं, वहीं खोरठा पद्य साहित्य ने अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक युगीन प्रश्नों को अपने भीतर आत्मसात किया है। यह शोध–पत्र इसी भाषाई और काव्यात्मक रूपांतरण के अंतर्संबंधों को उद्घाटित करता है।

## खोरठा पद्य साहित्य का कालक्रमीय एवं संरचनात्मक विकास

खोरठा पद्य साहित्य की विकास यात्रा को अकादमिक अनुशासन की दृष्टि से तीन प्रमुख ऐतिहासिक चरणों में विभाजित किया जा सकता है

### 1. लोक–मौखिक काल (1950 से पूर्व)

यह वह काल था जब खोरठा कविता किसी लिपि या पुस्तक के पृष्ठों पर बंधित नहीं थी, बल्कि यह खेतों, खलिहानों, पर्व–त्योहारों (जैसेकृकरम, सोहराय, जितिया, टूसू, और विवाह के अवसरों) पर जन–कंठों से स्वतःस्फूर्त रूप में प्रवाहित होती थी। इन पारंपरिक गीतों में श्रम की गरिमा, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सामुदायिक समरसता का प्रगाढ़ भाव निहित था।

### 2. पानुरी युग और शिष्ट साहित्य का शंखनाद (1950–1980)

खोरठा पद्य साहित्य के इतिहास में श्रीनिवास पानुरी का प्रादुर्भाव एक क्रांतिकारी मोड़ था। उन्होंने लोक–लय के ठसक को शास्त्रीय और आधुनिक बोध के साथ जोड़ा। उनके द्वारा रचित काव्य संग्रह 'बालकिरण' और 'दिव्यज्योति' ने लिखित खोरठा कविता की नींव को अडिग बनाया। पानुरी जी ने साबित किया कि खोरठा सिर्फ बोलचाल की भाषा नहीं, बल्कि उच्चकोटी के दर्शन और मानवतावाद को वहन करने में सक्षम माध्यम है।

### 3. वैज्ञानिक, जनवादी एवं समकालीन युग (1980 के बाद)

इस कालखंड में डॉ. ए. के. झा, शिवनाथ प्रमाणिक, श्याम सुंदर महतो 'सुकुमार' और बी. एन. ओहदार जैसे हस्ताक्षर सामने आए। इन्होंने खोरठा कविता को एक अकादमिक अनुशासन, व्याकरणिक अनुशासन और प्रखर जनवादी तेवर प्रदान किया। कविता अब केवल आत्म–संवाद न रहकर सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक अस्मिता का अस्त्र बन गई।

## विषयगत प्रक्षेपवक्ररू आधुनिकता और सामाजिक चेतना का अंतर्संबंध

खोरठा पद्य साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश यूरोपीय अर्थों में अंधानुकरण नहीं, बल्कि तार्किक विवेक, मानवीय अधिकारों के प्रति जागरूकता और शोषक तंत्र के विरुद्ध बौद्धिक विद्रोह है। इसके तीन प्रमुख विषयगत प्रक्षेपवक्र उभरकर सामने आते हैंरू

### 1. श्रम, वर्ग–संघर्ष और प्रगतिशील चेतना

झारखंड का पूरा समाज खनिज संपदा और कृषि के इर्द–गिर्द बुना हुआ है, जहाँ पसीना बहाने वाला मजदूर वर्ग हमेशा से शोषण का शिकार रहा है। खोरठा कवियों ने इस वर्ग–विषमता को अपनी कविताओं का केंद्रीय स्वर बनाया। श्रीनिवास पानुरी की पंक्तियाँ इस समतामूलक चेतना का उद्घोष करती हैंरू

"मानुस सबले बोड़ जात, मानुस–मानुस एक,
कोनो भेद नाहीं राखल ऊपर–नीचे भेष।"— (पानुरी, च. 24)

यह आधुनिक मानवतावादी दृष्टिकोण जाति, वर्ण और वर्ग की दीवारों को ध्वस्त करने की अकादमिक वकालत करता है।

### 2. भाषाई अस्मिता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण

चूंकि खोरठा को लंबे समय तक उपेक्षित रखने की औपनिवेशिक मानसिकता समाज में बनी रही, इसलिए कवियों ने भाषा को बचाने के लिए वैचारिक जंग छेड़ी। डॉ. ए. के. झा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह अकादमिक सत्य स्थापित किया कि किसी भी भाषा की जड़ें उसके लोक–विज्ञान और पर्यावरण में होती हैं। उनके अनुसार:
"खोरठा भाषा ना केवल गोठवेक साधन, इ हके पुरुखाक संपति आर पहिचान।" — (झा, 1982, च. 18)

यह पंक्ति भाषा को केवल संवाद का माध्यम न मानकर एक जीती–जागती सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित करती है।

### 3. पारिस्थितिक संकट और विस्थापन का त्रासदी–बोध

आधुनिकता और विकास के नाम पर झारखंड में जो बड़े–बड़े उद्योग, कारखाने और बांध बने, उसने यहाँ के मूलवासियों को अपनी ही जमीन से बेदखल कर दिया। शिवनाथ प्रमाणिक का महाकाव्य–खंड श्दामोदरेक कोराश इस विस्थापन और पर्यावरण के क्षरण का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज है। दामोदर नदी की उपमा देते हुए कवि लिखते हैं:
"दामोदरेक धारे–धारे उपजल संस्कृति, माटिक सोधा गंधे बाजल प्रीति।" — (प्रमाणिक, च. 45)

किंतु इसी दामोदर की छाती पर जब औद्योगिक प्रदूषण का काला साया पड़ा, तो खोरठा कविता ने उस कारपोरेट लूट के खिलाफ तीव्र असंतोष जताया (प्रमाणिक, चच. 60–65)।

### 4. स्त्री–विमर्श और खोरठा कविता

आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और उभरता हुआ आयाम 'स्त्री–विमर्श' है। पारंपरिक खोरठा समाज में स्त्री का स्थान मुख्य रूप से घरेलू सीमाओं तक सीमित रहा है। हालाँकि, समकालीन खोरठा कवयित्रियों और कवियों ने इस विमर्श को एक नई वैचारिक दिशा दी है। आधुनिक कविताओं में स्त्री को केवल एक 'सहचरी' या 'परंपरा की वाहक' के रूप में नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक, आत्मनिर्भर और व्यवस्था के विरुद्ध संघर्षरत इकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक रचनाओं में स्त्री द्वारा समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक मान्यताओं, विवाह के परंपरागत दबावों और आर्थिक असमानता के विरुद्ध मुखर आवाज बुलंद की जा रही है। यह खोरठा कविता का वह पक्ष है जो अब व्यक्तिगत पीड़ा से ऊपर उठकर सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता की वकालत कर रहा है।

### 5. लोक–संस्कृति और आधुनिकता का द्वंद्व

खोरठा पद्य साहित्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी लोक–संस्कृति की जड़ों को सुरक्षित रखने और आधुनिकता की चकाचौंध के बीच संतुलन बनाए रखने की है। आधुनिकता के नाम पर बाजारवाद ने लोक–कलाओं और परंपराओं को श्उपभोक्ता वस्तुश में बदलने की कोशिश की है। खोरठा कवियों ने इस द्वंद्व को अपनी कविताओं का मुख्य विषय बनाया है। एक ओर कवि अपनी लोक–संस्कृति (जैसे—करम, सोहराय) के प्रति मोह का इजहार करते हैं, तो दूसरी ओर आधुनिक मशीनीकरण के कारण टूटते सामुदायिक जीवन पर चिंता भी व्यक्त करते हैं। यह द्वंद्व खोरठा कविता को अधिक संवेदनशील और आत्म–चिंतनशील बनाता है। यहाँ आधुनिकता का अर्थ 'परंपरा का परित्याग' नहीं, बल्कि 'परंपरा के भीतर से तार्किक विकास' है, जो खोरठा साहित्य को अन्य क्षेत्रीय साहित्यों से विशिष्ट बनाता है।

### 6. तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यरू खोरठा और झारखंडी क्षेत्रीय भाषाओं का अंतर्संबंध

झारखंड की भाषाई विविधता में खोरठा, नागपुरी और कुड़माली (सादरी) का अपना विशिष्ट स्थान है, जो एक ही सांस्कृतिक परिवेश में पलने के बावजूद अलग–अलग भाषाई धरातल रखते हैं। जहाँ नागपुरी साहित्य में राजदरबारी प्रभाव और श्रृंगारिक पुट अधिक दृष्टिगोचर होता है, वहीं खोरठा साहित्य का मिजाज अधिक जनवादी, संघर्षशील और विद्रोही रहा है। नागपुरी जहाँ अपनी कोमलता और गेयता के लिए जानी जाती है, वहीं खोरठा अपनी 'ठसक' और वैचारिक स्पष्टता के लिए विख्यात है।
अकादमिक दृष्टि से यदि देखें, तो खोरठा पद्य साहित्य ने आधुनिकता को अपनाते समय अपनी लोक–जड़ों को छोड़ने के बजाय उन्हें 'लोक–विज्ञान' के रूप में पुनर्व्याख्यायित किया है, जैसा कि डॉ. ए. के. झा की रचनाओं में स्पष्ट है। जबकि अन्य क्षेत्रीय साहित्यों में आधुनिकता का प्रवेश मुख्यधारा के हिंदी साहित्य के अनुकरण जैसा प्रतीत हो सकता है, खोरठा कविता ने अपनी स्वतंत्र भाषाई अस्मिता को बनाए रखते हुए उसे वैश्विक मानव–मूल्यों से जोड़ा है। अतः, खोरठा की विशिष्टता इसके 'प्रतिरोधी तेवर' और 'वैज्ञानिक–सांस्कृतिक चेतना' में निहित है, जो इसे नागपुरी और सादरी के साहित्यिक परिदृश्य से एक पृथक वैचारिक धरातल प्रदान करती है।

### निष्कर्ष

यह विश्लेषणात्मक अध्ययन इस अकादमिक निष्कर्ष पर पूरी दृढ़ता के साथ पहुँचता है कि खोरठा पद्य साहित्य किसी सीमित भौगोलिक दायरे या संकुचित आंचलिकता की परिधि में बंधा हुआ कविताओं का सतही संकलन मात्र नहीं है, अपितु यह झारखंड के बहुपरतिए, जटिल और संघर्षशील सामाजिक ताने–बाने का एक जीवंत तथा प्रामाणिक दस्तावेज है. इस साहित्य ने यहाँ के मूल निवासियों के ऐतिहासिक विस्थापन के दर्द, श्रम की प्रतिष्ठा, भाषाई संप्रभुता के लिए किए गए वैचारिक संघर्ष और आधुनिक लोक–चेतना को अपने भीतर अत्यंत सहजता से आत्मसात किया है.
अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट होता है कि श्रीनिवास पानुरी के मानवतावादी दर्शन ने जहाँ खोरठा कविता को वर्गीय विषमता और शोषण के विरुद्ध एक मुखर विद्रोही स्वर दिया, वहीं डॉ. ए. के. झा के वैज्ञानिक–भाषाई दृष्टिकोण ने इसे व्याकरणिक और बौद्धिक दृढ़ता प्रदान कर सांस्कृतिक अस्मिता का सुदृढ़ स्तंभ बनाया. इसके अतिरिक्त, शिवनाथ प्रमाणिक की कृतियों ने तीव्र औद्योगीकरण, पर्यावरणीय क्षरण और विस्थापन की त्रासदियों को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है. जब हम इसे अन्य क्षेत्रीय भाषाओं जैसे नागपुरी या सादरी के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं, तो खोरठा की विशिष्टता इसके श्प्रतिरोधी तेवरश और 'लोक–चेतना' में स्पष्ट उभरकर आती है, जो इसे केवल अनुकरण करने वाली भाषा के बजाय एक स्वतंत्र और प्रखर वैचारिक धरातल प्रदान करती है.
साथ ही, समकालीन खोरठा कविता में स्त्री–विमर्श और आधुनिकता के द्वंद्व का समावेश यह सिद्ध करता है कि यह साहित्य समय की चुनौतियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है. इन युग–प्रवर्त्तक रचनाकारों के सम्मिलित योगदान से खोरठा कविता ने अपनी पारंपरिक लोक–सीमाओं को लांघकर वैश्विक मानवीय सरोकारोंकृयथा मानवाधिकार, पारिस्थितिक संतुलन और सामाजिक न्यायकृसे स्वयं को प्रगाढ़ता से जोड़ा है. वर्तमान

वैश्वीकरण के दौर में, जहाँ सांस्कृतिक समरूपीकरण का खतरा निरंतर बढ़ रहा है, अंतरराष्ट्रीय अकादमिक मंचों पर इस प्रकार के स्वदेशी एवं क्षेत्रीय साहित्यों का गंभीर अध्ययन भारत की बहुलतावादी सांस्कृतिक पहचान को रेखांकित करने की दिशा में एक युगांतरकारी और अनिवार्य कदम है.

## संदर्भ सूची


1ण झा, डॉ. ए.के., खोरठाक काठें पइदेक खंड़ी, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2011. पृ. 15–48.

2ण झा, डॉ. ए.के., खोरठ गइद–पइद संग्रह, पृथ्वी प्रकाशन, नई दिल्ली रोड, 2020.

3ण ओहदार, डॉ. बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य, उद्‌भव एवं विकास, मार्गदर्शन पब्लिकशन (राँची), 2018.

4ण पानुरी, श्रीनिवास बालकिरण. पृ. 5–30.

5ण पानुरी, श्रीनिवास दिव्यज्योति. धनबाद, पृ. 10–45.

6ण प्रमाणिक, शिवनाथ, दामुदरेक कोराञ, झारखंड झरोखा, राँची, 2014., पृ. 1–85.

7ण प्रभाकर, गजाधर महतो, पुटुस फुल, खोरठा ढाकी छेतर कमिटी, बोकारो, 1988.

8ण प्रिया, आर., एवं सिंह, ए. (2018). 'खोरठा, अ डाइंग लैंग्वेज एंड अर्जेंसी टू रिटेन इट्स प्योर वैरायटीश. रूप कथा जर्नल ऑन इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज, खंड 10, अंक 2, पृ. 115–124. DOI: 10.21659 / rupkatha-v10n2.13